मन रे मत कर तन की बढ़ाई भजन लिरिक्स

मन रे मत कर तन की बढ़ाई,
बडा बडा योगेशर खपगा,
तेरी कोन चलाई,
मन मेरा मत कर तन की बढ़ाई।bd।

हिर्णाखुश धरती पे योद्धा,
रामजी को नाम छिपाई,
उनके ओधर पहलाद जनमिया,
नख से दिया मराई,
मन मेरा मत कर तन की बढ़ाई।bd।

एक बाण अर्जुन को चलता,
सेष बाण बन जाइ,
काबा गोपियां लूटन लागा,
बाण चलन ना पाई,
मन मेरा मत कर तन की बढ़ाई।bd।

दस माथा जाके बीस भुजा थी,
कुंभकर्ण बल भाई,
तन रा गर्भ से लंका खो दी,
संग चाल्यो ना कोई,
मन मेरा मत कर तन की बढ़ाई।bd।

राजा सागर के सेश पुत्र थे,
नितका कुआ खुदाई,
एक शब्द से धरती मिल गी,
बाहर निकल ना पाई,
मन मेरा मत कर तन की बढ़ाई।bd।

तन का गर्व से वोही नर डूबे,
भव सागर के माही,
कहत कबीर सुनो भाई साधु,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

उल्टा समाल्यो माही,
मन मेरा मत कर तन की बढ़ाई।bd।

मन रे मत कर तन की बढ़ाई,
बडा बडा योगेशर खपगा,
तेरी कोन चलाई,
मन मेरा मत कर तन की बढ़ाई।bd।

– गायक एवं प्रेषक –
जयप्रकाश खटीक बड़ागांव
9521816461

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com